शोध मंथन, 2017 ISSN: (P): 0976-5255, (e) : 2454-339X, Impact Factor 3.8942 (ICRJIFR)
UGC Aproved Journal No. 40908

वर्तमान विश्व संकट एवं शान्ति शिक्षा की प्रासंगिकता

डॉ० जे० के० विकल
सहा0 प्रोफे0, शिक्षा विभाग, विजय सिंह पथिक राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कैराना, शामली

सारांश

भारत वर्ष की पावन धरा पर पुरातन काल से ही मनीषियों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम' को विश्व समाज का आधार माना है। भारतीय चिन्तन सदैव लोक कल्याणकारी रहा है। आदि ग्रन्थों ने भी विश्व समाज के समक्ष 'सर्व भवन्तु सुखिन' का आदर्श रखा है तथा शान्तिपूर्ण समाज की स्थापना हेतु सार्थक प्रयास किये हैं। सहअस्तित्व भी इसकी एक प्रमुख विशेषता रही है। समाज की एक दूसरी अवांछित विशेषता युद्ध है, जिसे नकारा नहीं जा सकता है। युद्ध एक कटु यथार्थ है, जो मानव मस्तिष्क से उदित होता है, इसके अनेक कारण गिनाये जा सकते हैं, परन्तु यह मानव सभ्यता को सदैव कलंकित करता रहा है। वर्तमान समय में हम विश्वव्यापी युद्ध की आशंका में जी रहे हैं, जिसका प्रभाव प्रत्येक मानव समाज पर पड़ता है। इसे आधुनिक जीवन की त्रासदी कहना अतिश्योक्ति न होगा।

निश्चित रूप से यह समस्या विकराल है, परन्तु इसका समाधान सोचना भी विश्व समाज का नैतिक दायित्व है। जब हम वैश्विक स्तर पर इस समस्या के समाधान का चिन्तन करते है तो अनायास ही इसके मूल में अंहिसा व शान्ति जैसे मूल्य परिलक्षित होते हैं। मानवीय मूल्यों के प्रशिक्षण हेतु शिक्षा केन्द्रीय बिन्दु का कार्य करती है। इस परिस्थिति में शिक्षा द्वारा शान्ति व अहिंसा के मूल्यों को किस प्रकार मानव मन में आत्मसात् किया जाये? यह यक्ष प्रश्न हमारे सम्मुख खड़ा होता है। वर्तमान वैश्विक समाज को व्यक्ति से लेकर विश्व स्तर तक कैसे शान्तिमय बनाया जाय, यह चिन्तन करना सर्वाधिक समीचीन होगा।

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः

डॉ० जे० के० विकल, ''वर्तमान विश्व संकट एवं शान्ति शिक्षा की प्रासंगिकता'', शोध मंथन जून 2017, पेज सं0 49–53
http://anubooks.com/?page_id=2030
Article No. 8(SM415)

डॉ० जे० के० विकल

प्रस्तावना

वर्तमान समय में भौतिकता की अन्धी दौड़ में सम्पूर्ण विश्व समाज संलग्न है तथा मानवीय मूल्यों की उपेक्षा के कारण यह त्रासदी उत्पन्न हुई है। आज पूरे विश्व में समाज का नैतिक पतन हुआ है तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का लोप हो रहा है जिसके परिणामस्वरूप सम्पूर्ण विश्व में अशान्ति का बोल बाला रहा है। विश्व के अधिकांश देश भयंकर हिंसा की चपेट में हैं। इस विषम परिस्थिति में शिक्षा द्वारा विश्व समाज का मार्गदर्षन करना अपरिहार्य हो गया है।

विश्व समाज हेतु शान्ति की आवश्यकता

आज उदीयमान वैश्विक समाज में आवश्यकता है, संकुचित राष्ट्रीय के स्थान पर वसुधैव कुटुम्बकम की, प्रजातीय व सांस्कृतिक रूढ़ियों के स्थान पर अन्तर्सांस्कृतिक समझ की तथा अनेकता में एकता की । वर्तमान विश्व समाज के समक्ष आज अंहिसा एवं अहिष्णुता की संस्कृति की स्थापना एक बड़ी चुनौती है जिसे शिक्षा द्वारा प्राप्त करना एक दूरगामी व दूरदर्शिता भरा निर्णय होगा। विश्वव्यापी आतंकवाद एवं भयावह युद्धों की आशंका से त्रस्त विश्व समाज में उथल पुथल मची है। मानव समाज इस हिंसायुक्त वातावरण से त्रस्त हो चला है। शान्त व समन्वित विश्व समाज के निर्माण हेतु विश्व शान्ति की आवश्यकता सहज ही प्रतीत होती है। इसके लिए शान्ति शिक्षा की अवधारणा को पुर्नजीवित करना होगा।

शान्ति शिक्षा की अवधारणा

वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस दौर में विश्व समाज ने नूतन परिवर्तित आयामों को अनुभूत किया है। वर्तमान वैश्विक समाज में ऐसे अप्रत्याशित परिवर्तन आये हैं जिन्हें सभ्य व सुसंस्कृत समाज की दृष्टि से उचित नहीं ठहराया जा सकता है। मानवीय समाज में उदित वैश्विक अशान्ति निःसन्देह सम्पूर्ण मानव जाति के उन्नयन हेतु बाधक तत्व है। आज विश्व समाज के समक्ष वैश्विक अषान्ति एक बड़ी समस्या बनकर उभर रही है। इसके समाधान हेतु विभिन्न दार्शनिकों, शिक्षाविदों व समाजशास्त्रियों ने शान्ति की शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप देने का सुझाव प्रस्तुत किया है।

शान्ति शिक्षा स्वयं में एक ऐसा शैक्षिक प्रारूप है जो ''सर्वधर्म समभाव' एवं सभी धर्मों के समान सम्प्रेषण पर आधारित है। शान्ति शिक्षा की अवधारणा को व्यापक अर्थों में विश्लेषित करने पर ज्ञात होता है कि शान्ति शिक्षा एक सार्वभौमिक शैक्षिक प्रणाली का अहम अंग है। जिसकी आवश्यकता वर्तमान में प्रत्येक देश की शिक्षा प्रणाली को है। विद्यमान वैश्विक संकट को दृष्टिगत रखते हुए यह नितान्त आवश्यक हो जाता है कि हम अपनी शिक्षा व्यवस्था में शान्ति शिक्षा को स्थाई रूप से समावेशित करें।

भारतीय समाज प्राचीन काल से ही षान्ति को महत्व देता आया है। भारतीय संदर्भ में शान्ति शिक्षा से अभिप्रायः एक ऐसे समाज की स्थापना से है, जो समानतापूर्ण, शान्तिपूर्ण, शोषण मुक्त, सहअस्तित्व व अंहिसा से परिपूर्ण हो।

शान्ति शिक्षा मूलतः एक अत्यन्त प्राचीन सम्प्रत्यय है, परन्तु वर्तमान आवश्यकता को दृष्टिगत रखें तो यह एक नवीन प्रत्यय के रूप में प्रकट होता है। शान्ति शिक्षा से अभिप्रायः एक

ऐसी शिक्षा व्यवस्था से है जो विद्यार्थियों के अन्दर दया, अहिंसा, सहयोग, समन्वय एवं सहनशीलता आदि गुणों को विकसित करती है। यह विद्यार्थियों में शान्तिपूर्ण समाज की स्थापना हेतु अभिप्रेरक के रूप में कार्य करती है। विश्व समाज के शान्तिमय प्रयासों हेतु यह व्यक्तियों में जनचेतना जाग्रत करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध व विश्वबन्धुत्व की भावना विकसित करती है। वस्तुतः शान्ति शिक्षा मूल्य शिक्षा से भिन्न नहीं अपितु परिप्रेक्ष्य विशेष में यह अपना अलग अस्तित्व बनाये हुए है।

एक भिन्न दृष्टिकोण से विचारें तो शान्ति जीवन जीने का तरीका, एक दृष्टिकोण, एक मूल्य व सन्तुलन की स्थिति है। यह एक आन्तरिक शान्ति और दूसरे के प्रति शुभेच्छाओं की अनुभूति है। शान्ति शिक्षा का प्रत्यय अत्यधिक विस्तृत है जिसमें अनेकानेक मूल्यों को समाहित किया जा सकता है। शान्ति के प्रत्यय का निरन्तर विकास हो रहा है, जिसके अन्तर्गत मानव अधिकार, प्रजातान्त्रिक मूल्य, समन्वय, स्नेह दया, परोपकार, परस्पर निर्भरता, समानुभूति, कृतज्ञता आदि मूल्यों का समावेश किया गया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एन०सी०ई०आर०टी०) द्वारा राष्ट्रीय पाठयचर्चा की रूपरेखा 2005 में भी शान्ति शिक्षा का विधिवत् उल्लेख किया गया है तथा इसका क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के प्रयास किये गये हैं। इसके अनुसार–

"शान्ति की शिक्षा एक ऐसे सरोकार के रूप में विकसित हो जो समूचे स्कूली जीवन पर छा जाए- पाठ्यचर्चा, कक्षा का वातावरण, स्कूल प्रबन्धन, शिक्षक-विद्यार्थी सम्बन्ध और स्कूल से जुड़ी तमाम गतिविधियाँ। अतः यह आवश्यक है कि पाठ्यचर्चा और परीक्षा का इस दृष्टि से मूल्यांकन हो कि कहीं ये विद्यार्थियों में अपर्याप्तता, निराशा और असुरक्षा आदि के भावों को बढ़ावा तो नहीं दे रहें हैं। साथ ही, आसपास और मीडिया द्वारा प्रचारित हिंसा का बच्चों के मन पर जो नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है उसे सायास दूर कर नैतिक एवं शान्तिपूर्ण जीवन के उद्देश्यों के गहरे अर्थों को विकसित किया जाए। शिक्षा सच्चे अर्थ में व्यक्तियों के अपने मूल्यों को स्पष्ट कर पाने में सहायक हो। उनको सजग निर्णय की दिशा में प्रेरित करें, हिंसा के स्थान पर शान्ति को चुनने के लिए प्रेरित करें, शान्ति निर्माण की प्रक्रिया से उन्हें जोंड़े न कि केवल शान्ति के उपभोक्ता बने रहें।"

शान्ति शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुए एन०सी०ई०आर०टी० के द्वारा तैयार किये गये राष्ट्रीय पाठ्यक्रम प्रारूप में स्कूलों में शान्ति शिक्षा को अनिवार्य बनाने का प्रयास किया जा रहा है। इसके लिए सभी विषयों में शान्ति शिक्षा पर एक–एक अध्याय जोड़ने का विचार है। इस प्रयास का उद्देश्य प्रारम्भ से ही छात्र–छात्राओं को ऐसी शिक्षा प्रदान करना है कि वे शान्ति सूत्र में पिरकर अशान्ति के कारणों का उन्मूलन कर सकें।

वैश्विक स्तर पर शान्ति शिक्षा की संकल्पना एक ऐसे विश्व समाज का निर्माण करना चाहती है, जिसमें अहिंसक समाज की अवधारणा निहित हो। शान्ति शिक्षा का विकास विभिन्न धार्मिक एवं दार्शनिक परम्पराओं के विकसित होने से हुआ है जो कि विश्व के कोने–कोने में अपनी मान्यताओं के अनुरूप विकसित हुए हैं। इनकी विचारधाराओं का प्रभाव प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप

से सम्पूर्ण जगत के जनमानस पर पड़ा है, जिन्होंने अपने–अपने तरीके से शान्ति को प्रस्तुत किया है। वास्तव में मानव चिन्तन के प्रारम्भिक काल से ही यह आदर्श स्थापित रहा है कि युद्ध न तो प्राकृतिक घटना है और न ही यह ईश्वरीय आदेश है। शान्तिपूर्ण समाज विश्व व्यवस्था को स्थापित करने में सहायक होता है जिसमें जनसमुदाय सौहार्दपूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करते हैं और साथ–साथ कार्य स्थापन में सहयोग करते हैं। शान्ति शिक्षा इस विचार को विश्व पटल पर ले जाने का प्रयास करती है। यह मूल से वैश्विक स्तर तक कार्य करती हैं, जो अव्यवस्थित विश्व को व्यवस्थित दृष्टिकोण प्रदान करती है। हिंसात्मक गतिविधियों को दूर कर अहिंसात्मक समाज की स्थापना करने के लिए विश्व स्तर पर शान्ति शिक्षा की अवधारणा प्रतिपादित की गयी तथा वर्तमान में यह एक ज्वलंत मुद्दा है। शान्ति कार्य और शान्ति के बारे में सोचने के तरीकों का हाल ही में काफी विस्तार हुआ है, जिसके चलते शान्ति शिक्षा का वैश्वीकरण हुआ और आज विश्व का प्रत्येक देश इस विषय पर मंथन कर रहा है, साथ ही इस विषय को गतिशील एवं बहुआयामी समझा जा रहा है, जिसके परिणामस्वरूप शान्ति संवर्धन के पहलुओं पर पुनर्विचार किया जा रहा है। वैश्विक स्तर पर शान्ति शिक्षा का उद्देश्य शान्ति की अवधारणा का विकास एवं अन्वेषण करने से है।

विश्व शान्ति हेतु शैक्षिक सुझाव

- शिक्षा के उद्देश्यों में विश्वशान्ति की प्रस्थापना को वरीयता दी जाये।
- सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली व नई शिक्षा नीति में शान्ति शिक्षा को स्थायी रूप से स्थान दिया जाये।
- अध्यापक शिक्षा (शिक्षक प्रशिक्षण) पाठ्यक्रम में भी शान्ति शिक्षा का समावेश किया जाये।
- पाठ्य सहगामी क्रियाएं शान्ति शिक्षा से आच्छादित हो।
- ऐसे शिक्षकों को चयनित किया जाये जिनका व्यक्तित्व शान्तिमय हो।
- शान्ति शिक्षा के प्रोत्साहन हेतु राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विचार गोष्ठियाँ व कार्यशालायें आयोजित की जाये।
- सैद्धान्तिक ज्ञान के साथ व्यावहारिकता का भी समावेष हो।
- विश्व शान्ति हेतु षिक्षा को एक प्रभावशाली उपकरण के रूप में प्रयुक्त किया जाये।
- विश्व समाज को सामाजिक व सांस्कृतिक रूप से शान्तिमय बनाने हेतु शान्ति शिक्षा को वैश्विक स्तर पर विशय के रूप में सम्मिलित किया जाये।
- अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना व अर्न्तसांस्कृतिक अवबोध की भावना को विकसित करने वाली संस्थाओं को बढ़ावा दिया जाये।
- राष्ट्रीय व अन्तर्राश्ट्रीय स्तर पर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाये जिससे शान्ति स्थापना के प्रयासों को बल मिले।

समीक्षा –

युद्धों की विभिषिका झेल चुके विश्व समाज के समक्ष वैश्विक शान्ति स्थापित करना एक बड़ी चुनौती है। शान्ति शिक्षा इस वैश्विक समस्या के समाधान हेतु एक उत्तम विकल्प है। युद्ध और अशान्ति मानव मस्तिष्क की उपज होते है और इसी मस्तिष्क को शान्ति प्रदान करना शिक्षा के माध्यम से सम्भव है। वैश्वीकरण की जिस प्रक्रिया को 'सर्वभवन्तु सुखिन' व 'वसुधैव कुटुम्बकम' जैसे उच्च आदर्शों पर आधारित होना चाहिए, वह मात्र प्रतिस्पर्धा, संघर्ष व पतन की द्योतक बनकर रह गई है। अधिकांश देशों में वैश्वीकरण से असंतोष पनपा है, इस प्रक्रिया ने शिक्षा को भी गहरे से प्रभावित किया हैं। वर्तमान शिक्षा के प्रति भी छात्रों, अभिभावकों एवं समाज में असंतोष की भावना व्याप्त है। ऐसे में शिक्षा की पुनर्रचना विश्व शान्ति के लिए आवश्यक है।

जे० कृष्णमूर्ति के शब्दों में:–

"हमारे वर्तमान मानवीय सम्बन्धों ने विश्व में अपार कष्ट पैदा किया है और यदि उसमें हम एक मौलिक बदलाव लाना चाहते हैं तो हमारा पहला कार्य आत्मबोध के जरिए अपने अन्दर एक आमूल बदलाव लाना होगा। हम सारी जिम्मेदारी सरकारों, धर्मों तथा विचारधाराओं पर डाल देते हैं। सरकार हमारा ही प्रतिबिम्ब है; धर्म तथा विचारधाराएं भी हमारे ही प्रतिबिम्ब है; और जब तक हम मौलिक रूप से नहीं बदलते, तब तक न तो उचित शिक्षा संभव है और न ही शान्तिपूर्ण विश्व।"

सम्पूर्ण मानव समुदाय के अस्तित्व को अक्षुण्ण बनाये रखने एवं विश्व को युद्धों की विभीषिकाओं से बचाने के लिए हम सभी को शान्ति शिक्षा के प्रचार–प्रसार हेतु आत्मिक सहयोग करना होगा। प्रत्येक राष्ट्र की शिक्षा प्रणाली में यदि शान्ति शिक्षा को समावेशित किया गया तो निःसन्देह विश्व शान्ति की संकल्पना साकार होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, एस० पी०, भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएं, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

2. कृष्णमूर्ति, जे०, शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य, कृष्णमूर्ति फाउन्डेषन राजघाटफोर्ट, वाराणसी

3. उपाध्याय, प्रतिभा, भारतीय शिक्षा में उदीयमान प्रवृत्तियां, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद

4. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली।